हरिभूमि
epaper.haribhoomi.com
Raipur Raipur Bhoomi - 08 Jun 2025 - Page 6

देशभर से पहुंचे 35 साहित्यकारों ने बताई अपनी संस्कृति-परंपरा

बंजारा समाज में खुशी और गम को गीतों में पिरोनी की परंपरा, सौंरा जनजाति में आज भी पत्र से शादी का प्रस्ताव

देशभर के बहुल्य क्षेत्रों में आदिवासी जनजातियां निवास करती हैं, जो अपनी भिन्न संस्कृति एवं परंपराओं के साथ जीवित हैं। साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं साहित्य अकादमी छत्तीसगढ़ संस्कृति परिषद के संयुक्त तत्वाधान में अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मेलन का आयोजन किया गया है। दो दिवसीय सम्मेलन की शुरुआत सिविल लाइंस स्थित कन्वेंशन हॉल में की गई, जहां देशभर से 35 साहित्यकारों ने उपस्थिति दर्ज कराई। सम्मेलन तीन सत्रों में किया गया, जिसमें संस्कृति के संरक्षण में जनजातीय भाषाओं का महत्व, बहुभाषी कहानी-पाठ एवं कविता पाठ विषयों पर चर्चा की गई।

बंजारा समुदाय में जन्म से लेकर मृत्यु तक गीत गाने की परंपरा

देशभर में बंजारा समुदाय अपनी लोकगीतों के लिए प्रसिद्ध है, जहां विवाह से पूर्व वधू को रोने की कला सिखाई जाती है। विवाह के दौरान रोते वक्त परिवार के प्रत्येक व्यक्ति का जिक्र होना अनिवार्य है, जहां नाम से संबोधित कर स्वर में रोया जाता है। आधुनिक दौर में आदिवासी अंचलों में यह परंपरा आज भी जारी है। साहित्यकार डॉ. गीता ने बताया कि बंजारा समुदाय में बच्चे के जन्म से लेकर, किसी व्यक्ति के मृत्यु तक गीत गाया जाता है।

गोंडी आदिवासी जनजातियों की जीवनशैली पर कहानी पाठ

आदिवासी गोंडी संस्कृति के महत्व को बताने कवर्धा से नीलकुमार सोरेन सम्मेलन में शामिल हुए, जिन्होंने गोंडी आदिवासी जनजाति की जीवनशैली पर 4-5 साल की मेहनत से कहानी पाठ तैयार किया। नीलकुमार प्राथमिक स्कूल में प्राध्यापक हैं, जो हिंदी भाषा की कहानी व कविताओं को गोंडी बोली में अनुवाद कर बच्चों को पढ़ाते हैं, ताकि युवा पीढ़ी को गोंडी बोली की समझ और जानकारी हो सके। इस बीच यह बोली विलुप्ति की कगार पर है, जिसे बचाने यह प्रयास किया जा रहा है। बातचीत में बताया कि गोंडी जनजातियों में त्योहार का विशेष महत्व है, जहां त्योहार पर जाने से पहले, त्योहार की विधि, त्योहार के बाद घर वापसी, जश्न और भोजन तैयार करने तक के सफर को गोंडी जनजाति अपने नृत्य में दर्शाती है। आदिवासियों की यह प्राचीन मान्यता है, जो उनकी जीवन को दिखाती है।

सौरा जनजाति में विवाह का अनोखा प्रावधान, पत्र भेजकर कन्या की मंजूरी

ओडिशा राज्य की सौरा जनजाति ऐसा समुदाय है, जहां विवाह प्रस्ताव पत्र के आधार पर होता है। इस समुदाय में प्रेम विवाह का कोई प्रावधान नहीं। साहित्यकार इमाम सबरा साल 1997 से अब तक सौरा जनजाति की जीवनशैली और रहन सहन पर विशेष अध्ययन कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि विवाह से पूर्व वर अपनी मनपसंद कन्या को बाजार में प्रस्ताव पत्र देता है, जिसके बाद कन्या की मंजूरी से विवाह प्रक्रिया पूर्ण मानी जाती है। यह परंपरा अविकाल से चली आ रही है, जो आज भी जारी है। इस जनजातियों के प्रत्येक घर में मुर्गी पालना अनिवार्य है, जहां आज भी लोग मुर्गों की आवाज से ही समय का आकलन करते हैं। आम, कटहल और खजूर के वृक्ष को देवता का दर्जा दिया गया है, जहां विवाह एवं प्रकृति को पूजा जाता है।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मेलन का आयोजन

रायपुर। सम्मेलन के दौरान आदिवासी जनजातियों की संस्कृति, भाषा एवं जीवनशैली के विषय चर्चा का मुख्य आधार रहे, जिसमें डी. कामकोटि, माधुरी यादव, उमेद अग्रु, नीलकुमार सोरेन, इमाम सबरा, शिवशंकर अखबर, अजकी साहू आदि साहित्यकार उपस्थित रहे, जिन्होंने आदिवासी जीवनशैली को सरल शब्दों में समझाने का प्रयास किया। छत्तीसगढ़, झारखंड, गुजरात, राजस्थान, ओडिशा, मध्यप्रदेश, मणिपुर, तेलंगाना के अलावा अन्य राज्यों से साहित्यकार मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता छत्तीसगढ़ संस्कृति परिषद से विवेक आचार्य ने किया। सम्मेलन के दूसरे दिन विरासत की रक्षा के लिए आदिवासी साहित्य का वैभव विषय पर चर्चा की जानी है।